प्रारम्भिक शिक्षा में गुणात्मक सुधार की सम्भावनाएं

– डॉ. संतोष कुमार चमोला

बाल मन की असीम कल्पनाओं एवं क्रियाकलाप को किसी सीमा में बांधना अत्यंत कठिन है, किन्तु उन्हें सही दिशा में ले जाने का प्रयास ही एक शिक्षक, अभिभावक, सामाजिक कार्यकर्ता, प्रशासन एवं समस्त जन–मानस का मूल ध्येय होना चाहिए। इसी लक्ष्य की प्राप्ति के उद्देश्य से विभिन्न कार्यक्रम, गतिविधियां, क्रियाकलाप, शोध कार्य, फील्ड वर्क आदि चल रहे हैं। केन्द्र सरकार द्वारा सर्वप्रथम एक सकारात्मक पहल के रूप में वर्ष 2009 में अनिवार्य एवं निःशुल्क, शिक्षा का अधिकार अधिनियम पारित किया गया। 26 अगस्त, 2009 को महामहिम राष्ट्रपति के अनुमोदनोपरान्त 86वें संविधान संशोधन, 2002 के खण्ड–3 में अनुच्छेद–21 के द्वारा 6 से 14 आयु के बच्चों में निःशुल्क और अनिवार्य शिक्षा प्रदान करना मौलिक अधिकार में शामिल किया गया।

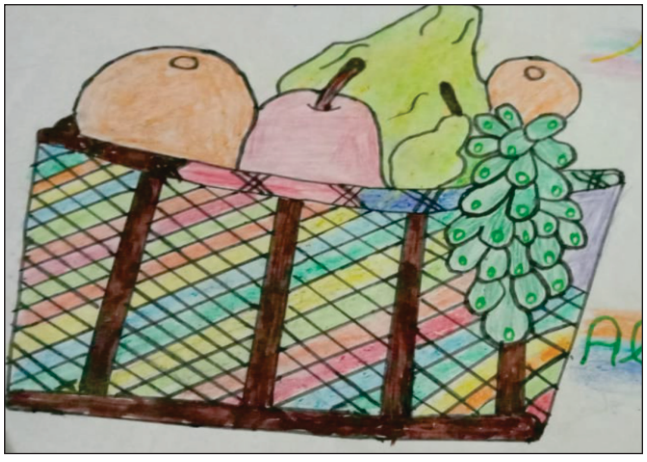

किसी भी कानून को पारित करना जितना महत्वपूर्ण है। जन मानस द्वारा व्यवहार में अपनाना भी उतना ही महत्वपूर्ण है। इससे उस अधिनियम में परिलक्षित उददेश्य की उचित समयावधि में प्राप्ति सम्भव हो पाती है। समस्त व्यवस्था के विभिन्न स्तर क्रमशः केन्द्र, राज्य, जिला, विकासखण्ड एवं संकुल स्तर के उपरान्त विद्यालय के शिक्षक, बच्चों के अभिभावक एवं स्वयं बच्चों के सकारात्मक योगदान किसी भी योजना अथवा कार्यक्रम को अधिक प्रभावी बनाते हैं।

किन्तु इन योजनाओं को धरातल पर लागू करना तथा बच्चों को उसका लाभ मिला पाना अत्यंत कठिन है। अत केन्द्र व राज्य सरकार द्वारा संचालित विभिन्न कार्यक्रमों एवं योजनाओं का व्यापक प्रचार प्रसार के साथ ही यह सुनिश्चित किया जाना नितांत आवश्यक है जिससे उनका लाभ पात्रों को मिल सके।

प्रारम्भिक शिक्षा में गुणात्मक सुधार के लिए सभी का सहयोग आवश्यक है। अधिनियम के माध्यम से सरकार द्वारा शिक्षा को 6 से 14 वर्ष के बच्चों के लिए निःशुल्क एवं अनिवार्य कर दिया गया है किन्तु शैक्षिक गुणवता के लिए अतिरिक्त प्रयास आवश्यक हैं। चूंकि सर्वविदित है कि यदि किसी भवन की नींव ही मजबूत नहीं होगी तो वह सुरक्षित कैसे रहेगा। प्रारम्भिक स्तर का तात्पर्य कक्षा 1 से 8 स्तर की शिक्षा प्राप्त करना है। प्रारम्भिक शिक्षा के सर्वाभौमीकरण के लिए भारत सरकार ने वर्ष 2001 में सर्व शिक्षा अभियान कार्यक्रम आरम्भ किया। कार्यक्रम के संचालन से हुए सकारात्मक परिवर्तन के उपरान्त ही शिक्षा को संवैधानिक अधिकार के रूप में स्थापित करने के लिए वर्ष 2009 में निःशुल्क एवं अनिवार्य शिक्षा का अधिकार, अधिनियम–2009 (Right To Education-2009) लागू किया गया।

प्रारम्भिक शिक्षा को अधिक प्रभावशाली बनाने के लिए गुणात्मक सुधार नितांत आवश्यक है। प्रारम्भिक शिक्षा को नवीन कलेवर प्रदान कर कुछ सकारात्मक सुझावों द्वारा अधिक उपयोगी एवं प्रभावी बनाया जा सकता है।

1. किसी भी विद्यालय अथवा संस्थान में मूलभूत सुविधाओं यथा कक्षा–कक्ष, प्रार्थना स्थल, क्रीड़ा

मैदान, स्वच्छ पेयजल, बालक–बालिका हेतु पृथक से शौचालय, पौष्टिक मध्याह्न भोजन, नवीन तकनीकी आधारित शिक्षण एवं अधिगम सामग्री (स्मार्ट क्लास आदि) की उपलब्धता नितांत आवश्यक है। यदि किसी विद्यालय के पास यथोचित मात्रा में भौतिक एवं मानवीय संसाधन उपलब्ध नहीं हैं तो सभी को मिलकर प्रयास करना होगा अर्थात स्थानीय प्रतिनिधि, जन–प्रतिनिधि, निगमित समूह के सामाजिक दायित्व (CSR) आदि के द्वारा प्रदत्त सहयोग से इनकी उपलब्धता सुनिश्चित की जा सकती है।

2. पाठ्यक्रम को स्थानीय उदाहरण केन्द्रित, गतिविधि आधारित, अधिक रुचिकर सुग्राह्य एवं सरल बनाया जाए।
3. पाठ्यचर्या एवं कक्षा शिक्षण के दौरान घर के परिवेश आधारित गतिविधियों को उदाहरण के रूप में प्रस्तुत करते हुए स्थानीय बोली एवं भाषा का अधिक प्रयोग किया जाए।
4. कक्षा–शिक्षण में चित्रमाला एवं लोकगीत संगीत का समावेश यथा BALA (Building As Learning Aid) संकल्पना का प्रभावी उपयोग किया जाए।
5. कक्षा शिक्षण के पूर्व छात्र–छात्रा की रूचि एवं सीख स्तर की समझ बनाना उचित शिक्षण पद्धति का चयन किया जाए ताकि उन्हें अधिकतम ज्ञान की प्राप्ति हो।
6. बाल केन्द्रित कार्यक्रमों के आयोजन से सभी बच्चों की प्रभावशाली प्रतिभागिता सुनिश्चित होनी चाहिए।
7. बालिका शिक्षा के प्रति जागरूकता उत्पन्न करने के लिए प्रत्येक संस्थान में बालिकाओं के लिए अनिवार्य रूप से बालिका शौचालय एवं अन्य आधारभूत संरचना के साथ ही बालिका पंचायत का गठन, बालिका केन्द्रित गतिविधियों यथा बालिका क्विज, बालिका महोत्सव, प्रतिभा सम्मान समारोह, स्थानीय स्तर पर प्रसिद्व महिलाओं की जीवनी एवं उनसे मुलाकात आदि का आयोजन किया जाए।
8. स्थानीय स्तर पर जागरूकता हेतु छात्र–छात्राओं, अभिभावक एवं जन प्रतिनिधि के साथ मिलकर नाट्य मंचन, कठपुतली प्रदर्शनी, कहानी लेखन, कविता वाचन, पोस्टर निर्माण, निबंध लेखन, वाद विवाद आदि रुचिकर गतिविधियों का आयोजन किया जाए।
9. वर्तमान परिवेश में ज्ञान एवं गतिविधियों के व्यापक प्रचार–प्रसार में सोशल मीडिया एक प्रभावी माध्यम है जिसमें गूगल, फेसबुक, यू–ट्यूब, वाट्सएप, विविध संस्थानों द्वारा निर्मित वेबसाइट एवं अन्य एप्लिकेशन के माध्यम से नवीनतम तकनीक आधारित शिक्षण सामग्री का व्यापक स्तर पर वितरण कर उनका प्रभावी प्रयोग किया जा सकता है। प्राचीन ज्ञान एवं अनुभव का नवीनतम तकनीक के द्वारा प्रभावशाली वितरण अत्यंत लाभकारी सिद्ध होगा।
10. NCERT संचालित विविध कार्यक्रम यथा ePathshala, Swayam Prabha, Kishor Manch, Youtube Channel, DIKSHA, NISTHA, NROER, PRAGYATA आदि के अतिरिक्त अनेक स्वयंसेवी संगठनों द्वारा तैयार किये गए उपयोगी एवं रुचिकर शिक्षण सामग्री के माध्यम से शिक्षक न केवल स्वयं के ज्ञान में अभिवृद्धि कर सकता है बल्कि छात्र–छात्राओं को भी रोचक शिक्षण सामग्री प्राप्त होगी।
11. चूंकि शिक्षा का उद्देश्य केवल शिक्षित करना नहीं है बल्कि समाज के लिए एक स्वस्थ एंव जिम्मेदार नागरिक तैयार करना है। बिना बस्ते के बोझ की शिक्षा एवं केवल किताबी ज्ञान तक सीमित न रहने की संकल्पना को धरातल पर फलीभूत करने के लिए विद्यालय को आनन्दालय बनाते हुए शिक्षण कार्य को केवल पाठ्यक्रम तक ही सीमित न रखते हुए स्थानीय इतिहास, संस्कृति, शिल्प एवं अन्य व्यवहारात्मक ज्ञान को भी सम्मिलित किया जाए।
12. विद्यालय को आनन्दालय बनाने के लिए विभिन्न पाठ्य सहगामी क्रियाओं यथा बाल केन्द्रित खेल गतिविधियों के साथ, Youth & Eco Club का गठन, Guidance & Couselling Cell का गठन, Display Board में दैनिक गतिविधियों का विवरण अंकित करना, Honour Board में विद्यालय में विभिन्न गतिविधियों में सर्वोत्तम कार्य करने वाले छात्र–छात्रा का नाम अंकित करना, Newspaper

Stand में दैनिक अखबार की उपलब्धता सुनिश्चित करना, दीवार पत्रिका एवं बाल पत्रिका का प्रकाशन, सदनवार गतिविधियों का संचालन, प्रेरक सामग्री यथा फिल्म, कहानी आदि का प्रदर्शन आदि गतिविधियां एवं कार्यक्रम विद्यालय, संकुल, विकासखण्ड एवं जनपद स्तर पर संचालित किये जाने चाहिए।

13. शिक्षण अधिगम सामग्री (Teaching Learning Material) का विषय एवं कक्षा के अनुसार नियमित उपयोग करना चाहिए।
14. कक्षा–कक्ष शिक्षण के दौरान श्यामपट का प्रभावी उपयोग शिक्षण को अधिक रूचिकर एवं ज्ञान को चिर–स्थायी बनाने में सहायक होता है। अतः श्यामपट का नियमित उपयोग किया जाना चाहिए।
15. प्रत्येक दिन कक्षा–शिक्षण के दौरान पूर्व की कक्षा में कराए गए कार्य की पुनरावृत्ति की जाए तथा आज कराए जाने वाले कार्य से उसकी सम्बन्ध स्थापित करते हुए जिज्ञासा प्रश्न पूछा जाए, ताकि सभी छात्र–छात्राएं कक्षा में सक्रिय रहें तथा उनमें व्यक्तिगत सहभागिता विकसित हो सके।
16. बदलते परिवेश में शिक्षक की भूमिका में भी व्यापक बदलाव आया है। वर्तमान शिक्षण व्यवस्था में शिक्षक न केवल सुगमकर्ता एवं परामर्शदाता है, बल्कि छात्र–छात्राओं के लक्ष्य निर्माण एवं उसे प्राप्त करने में पथ–प्रदर्शक भी है।
17. शिक्षा में व्यापक सुधार के उपरान्त स्वस्थ एवं प्रतिभावान नागरिक तैयार करने के लिए न केवल नीति निर्धारण बल्कि उसके सही समय पर क्रियान्वयन को प्रभावी बनाना होगा।

(लेखक, रमसा समन्वयक हैं।)

परी की पेन्सिल

चुलबुल नाम की एक प्यारी सी लड़की थी। एक दिन चुलबुल आराम से अपने बिस्तर पर सो रही थी तभी उसने एक सपना देखा कि उसकी खिड़की पर एक परी उसे बुला रही है। चुलबुल उठी और परी के साथ चल दी। परी एक बहुत खूबसूरत बगीचे में उसे ले गई। वहां पर बहुत सारी परियां थीं। उनके पंख सुनहरे थे। सभी परियां बगीचे में नाच रही थीं। चुलबुल भी उनके साथ नाचने लगी। तभी उसने देखा बगीचे के बीच में एक बूढ़ी परी बैठी है जो उसको बुला रही है। बूढ़ी परी ने उसे खूब प्यार किया और इनाम में एक पेन्सिल दी और कहा– इससे जो तुम चाहोगी वो काम पूरा होगा। चुलबुल खुशी–खुशी घर आ गई। घर आते ही उसने अपनी पेन्सिल से कहा 'उसके भाई की अलमारी के सारी टॉफियां मेरी हो जायें।' सारी टॉफियां चुलबुल के पास आ गईं। फिर उसने अपना बस्ता निकाला सारा गृहकार्य पूरा हो जाये। पेन्सिल ने सारा काम पूरा कर दिया। चुलबुल तो अब फूली नहीं समा रही थी। अब उसने उस पेन्सिल को छुपा दिया।

सुबह वह उसे अपने स्कूल ले गई। अब तो उसे बच्चों को परेशान करने में मजा आने लगा था। कभी किसी की कॉपी तो कभी किसी का रबड़ छुपा देती। छुट्टी हुई घर आई, मां ने उसे खाना खाने के लिये टेबल पर बुलाया। चुलबुल ने मां से कहा 'मुझे यहीं बिस्तर पर ही खाना दे दो।' मां ने गुस्से में मना कर दिया, चुलबुल ने सोचा क्यों न मैं टेबल ही गायब कर दूं, तो मां मुझे यही पर खाना दे देगी। चुलबुल ने अपनी पेन्सिल उठाई कि टेबल गायब हो जाये, उसने जैसे ही पेन्सिल घुमाई टेबल के सामने मां आ गई और मां गायब हो गई। चुलबुल जोर–जोर से रोने लगी और मां–मां चिल्लाने लगीं, तभी चुलबुल की मां ने उसे उठाया और पूछा क्या हुआ बेटा, चुलबुल की आंख खुली। मां को सामने पाकर वह मां से लिपट गई। मां को प्यार करने लगी। मां ने भी उसे गले से लगाया फिर पूछा क्या हुआ था बेटा? चुलबुल मुस्कराई, 'भगवान का लाख–लाख शुक्र है, कि यह एक सपना था।'

– विनीता शर्मा,
सहायक अध्यापिका, राजकीय प्राथमिक विद्यालय, लक्खीबाग, देहरादून